IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138
INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"युवाओं के मानसिक एवं शारीरिक विकास पर बेरोजगारी के प्रभाव का अध्ययन"

विनती[1] डॉ0 शोभा गिल[2]
शोध छात्र[1] शोध पर्यवेक्षक[2]
श्री वेंकटेशवरा विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा[1]
श्री वेंकटेशवरा विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा[2]

आजकल उत्पादन तकनीको में परिवर्तन हो रहा है। दिन प्रतिदिन नई–नई तकनीके सामने आ रही है जिनके द्वारा विभिन्न प्रकार के कार्य कम श्रम व कम समय में कम्यूटर तथा मशीनों की सहायता से पूर्ण किये जा रहे है, जिसके कारण बड़ी संख्या में श्रमिक बेरोज़गार होते जा रहे है। जब पूँजीगत उपकरणों एंव मशीनों की संख्या में वृद्धि होती है तब मानव श्रम को इन उपकरणों द्वारा विस्थापित कर दिया जाता है और इस प्रकार बेरोज़गारी का स्वरूप प्राविधिक हो जाता है। आज के समय में विभिन्न मशीनों, यन्त्रों तथा कम्यूटरों ने अनेको श्रमिकों का रोज़गार छीन लिया है।[1]

इसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्रों में भी बेरोज़गारी की स्थिति भयावह का रूप धारण करती जा रही है। ग्रामीण क्षेत्रों का मुख्य व्यवसाय कृषि कार्य होता है। जनसंख्या तीव्र वृद्धि के के कारण कृषि कार्य में लगे लोगों की संख्या में वृद्धि हुई है, जबकि कृषि भूमि सीमित है और उत्पादन भी अपेक्षाकृत कम ही है। इस प्रकार देखने में आता है कि कृषको की संख्या में वृद्धि होने के बावजूद भी उत्पादन में वृद्धि कम हो रही है। अतः स्पष्ट है कि अप्रत्यक्ष रूप से कृषक भी बेरोज़गार हो रहे है।[2]

कुछ कृषक वर्ष में कुछ दिन कृषि कार्य करते है तथा बाकी दिन खाली ही रह जाते है और इस प्रकार वे भी अद्धबेरोज़गारों की श्रेणी में आते है। अधिकांश शहरी क्षेत्रों में खुली बेरोज़गारी देखने को मिलती है। इस प्रकार की बेरोज़गारी व्यक्तिगत रूप से निंदनीय व कष्टदायक मानी जाती है, इसका प्रभाव बेरोज़गार व्यक्ति पर नही वरन् उसके आस–पास के परिवेश पर भी पड़ता है। इस प्रकार की बेरोज़गारी अनेक सामाजिक बुराइयों को भी जन्म देती है, जैसे– आत्माहत्या, चोरी–डकैती, अपहरण आदि। इनसे समाज में आश्सान्ति, अव्यवस्था, भ्रष्टाचार आदि का प्रार्दुभाव होता है। इस समस्या से मुरादाबाद जनपद का युवावर्ग बुरी तरह पीड़ित है।[3]

यहाँ बेरोज़गारी की स्थिति के प्रमुख लक्ष्णों की ओर ध्यान देने से पता चलता है कि ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में बेरोज़गारी अधिक है। शहरी क्षेत्र के बेरोज़गारों में बेरोज़गारी का 12 प्रतिशत अनुपात काफी अधिक है। ऐसा उच्च स्तर की शिक्षा में वृद्धि होने के कारण हुआ है, क्योकि इस स्तर पर रोज़गार के अवसरों में आनुपातिक रूप से वृद्धि नही हो पाई है। इस कारण शहरी क्षेत्र के युवक–युवतीयाँ बेरोज़गारी की समस्या से अधिक पीड़ित है।[4]

बेरोज़गारी की समस्या के विकराल रूप धारण करने में हमारी शिक्षा– प्रणाली भी प्रमुख भूमिका निभा रही है क्यों कि युवावर्ग को प्राप्त होने वाली शिक्षा उसे रोज़गार के लिये तैयार नही करती है। हमारी शिक्षा प्रणाली युवावर्ग को डिग्री तो दिलाती है पर उसको रोज़गार नही दिलवा पाती।[5] इसका मुख्यकारण शिक्षा के पाठ्यक्रम का दूषित होना

उदेश्यपरक व रोज़गार परक न होना है। हमारी शिक्षा प्रणाली में प्रयोगात्मक विद्यों की कमी है, अतः शिक्षा के पाठ्यक्रम में प्रोयगात्मक कार्य न होना बेरोज़गारी का कारण बन गया है।[6]

आज का युवावर्ग भारतीय संस्कृति का छोड़कर पाश्चात्य संस्कृति व रीति– रिवाजों को अपनानें में लगा है जिसके परिणाम स्वरूप कुटीर व लघुउद्योगों की संख्या में कमी आई है, क्योकि आज के युवावर्ग का एक मात्र सपना बहुराष्ट्रीय कम्पनियों में काम करना है।[7] यह बात और है कि कितने युवक इन कम्पनियों में काम कर पाते है और ये कम्पनियाँ कितने युवक.युवतीयों को सच्चे अर्थो में रोज़गार प्रदान करती है।

इस पाश्चात्य चकाचौंध में युवावर्ग अपने पैतृक व्यावसाय, लघु उद्योगों, कुटीर उद्योग, काम धन्धों की अपेक्षा करके मेंट्रोपोलिटन शहरों की तरफ भाग रहे है तथा इन शहरों में कम्पनियों में सविदा पर कार्य कर रहे हैं और अस्थाई रूप से रोज़गार पा रहे है। इस तरह वे अभी भी अप्रत्यक्ष रूप से बेरोज़गार ही है।[8]

आजकल कुछ युवाओं को सरकारी नौकरी पाने का बुखार चढ़ा है। ये युवक– युवतियाँ अधिकांशतः आई0ए0एस0पी0सी0एस0, आई0पी0एस0 आदि की तैयारी में लगें रहते है और एक लम्बा समय इन परीक्षाओं की तैयारियों में लगाते है, लेकिन शासन स्तर पर फैले भ्रष्टाचार व धाँघलेबाज़ी के कारण अधिकांश युवक.युवतीयाँ असफल ही रहते है।[9]

उस समय कोई छोटी नौकरी या घरेलू व्यावसाय करने में ये युवावर्ग अपने को अपमानित होने का अहसास करते है और बेरोज़गारी का शिकार हो जातें है।[10] इस प्रकार बेरोज़गारी मुरादाबाद के युवावर्ग में अपनी पैठ बनाती जा रही है।

बेरोज़गार युवावर्ग की श्रेणी में वे युवक–युवतीयाँ भी आतें है जिन्हे आकस्मिक, अंशकालीन रोज़गार मिलता है और जिनकी उत्पादकता उनकी क्षमता से कम रहती है। जब ऐसे श्रमिकों की क्षमता का पूर्ण उपयोंग नही हो पाता तो उन्हे अल्परोज़गार से ग्रसित श्रमिक कहा जाता है। स्थिति यह है कि एक एम0ए0 (इतिहास) किये हुये युवक को एक अस्पताल में वार्डबॉय की नौकरी करनी पड़ रही है। इसी प्रकार एक चार्टड एकाउन्टेंट को काम के अभाव में साधारण एकाउन्टेंट की नौकरी करनी पड़ रही है।[11]

इस प्रकार व्यक्ति प्रत्यक्ष रूप से काम में तो लगा हुआ होता है, परन्तु सही अर्थो में उसकी क्षमता, ज्ञान कौशल का सही व पूर्ण उपयोंग नही हो पा रहा है। वर्तमान स्थिति से स्पष्ट है कि मण्डल की सरकारी योजनायें पूर्ण रोज़गार का उद्देश्य प्राप्त करने में पूर्णतया असमर्थ रही है तथा प्रत्येक अगले कार्यक्रम व योजना के बाद बेरोज़गार लोगों की संख्या में वृद्धि होती गई है।[12]

वर्तमान में बेरोज़गारी की स्थिति इतनी भयावह हो गई है कि नगरीय व ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोज़गार युवक एंव युवतियाँ कोई भी काम करने को इच्छुक रहते है, भले ही उन्हे कितनी मज़दूरी क्यों न मिले। यही कारण है कि इस मण्डल में परिमाण अधिक होते हुयें भी बेरोज़गारी की काफी कम रहती है अर्थात बेरोज़गार रहते हुये भी रोज़गार में लगा हुआ दिखाई देता है। इस प्रकार हम अप्रत्यक्ष बेरोज़गारी कहते हैं।

भारत में बेरोज़गारी की समस्या में बहुयामी अध्ययन के लिये नियुक्त भगवती समिति की रिपोर्ट (1973) के अनुसार भारत में औसत रूप से एक पुरूष स्नातक को 14 माह, महिला स्नातक को 13 माह, प्रौद्योगिकी एंव अभियान्त्रिंक (इंजीनियर) स्नातक को 11 माह तक रोज़गार के लिये प्रतीक्षा करनी पड़ती है।[13] यही नही स्नातकोतर तथा पी0एच0डी0 की उपाधि धारकों को भी रोज़गार में स्थिति बद् से बेहतर हो चुकी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. गुप्ता प्रो0 एस0पी0 : अनुसंधान संदर्शिका, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृ0–11
2. वही, पृ0–13
3. गुप्ता प्रो0 एस0पी0 : अनुसंधान संदर्शिका, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृ0–93
4. गुप्ता प्रो0 एस0पी0 : अनुसंधान संदर्शिका, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृ0–121
5. गुप्ता प्रो0 एस0पी0 : अनुसंधान संदर्शिका, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृ0–111
6. गुड एवं स्केट्स : मैथड्स ऑफ रिसर्च, न्यूयार्क, न्यू एण्लीटन सेंचुरी क्राफ्ट्स, 2004, पृ0–558.
7. डॉ0 के0पी0 पाण्डेय : शैक्षिक अनुसंधान, विश्वविद्यालय प्रकासन, वाराणसी, 2016.
8. आर0ए0 शर्मा : शिक्षा अनुसंधान, आर0लाल बुक डिपो, मेरठ 2018, पृ0–31
9. लाला वचन त्रिपाठी : मनोवैज्ञानिक अनुसंधान पद्धतियाँ, एच0पी0 भार्गव बुक हाउस, आगरा, 2055, पृ0सं0–69.
10. आर.ए. शर्मा : शिक्षा एवं मनोविज्ञान में परा एवं अपरा सांख्यिकी, आर0लाल0 बुक डिपों मेरठ, पृ0सं0–280.
11. सरीन एण्ड सरीन : शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ, विनोद पुस्तक मन्दिर, 2017, पृ0सं0 69.
12. डॉ0 एच0के0 कपिल : सांख्यिकी के मूल तत्व, एच0पी0 भार्गव हऊस, आगरा, पृष्ठ–133.
13. डॉ0 बी0एस0 रायजादा : शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, पृ0–158.